महिलाओं को कैसे सशक्त बनाया जाए

प्रासंगिकता: जीएस -1: महिलाओं और महिला संगठनों की भूमिका।
की वर्डस : सिबिल, भारतीय रिजर्व बैंक, सीएजीआर, सेवा, लिज्जत पापड़, संभावित उद्यमी, बिजनेस लोन, ग्रामीण महिलाएं, महिला उद्यमी।

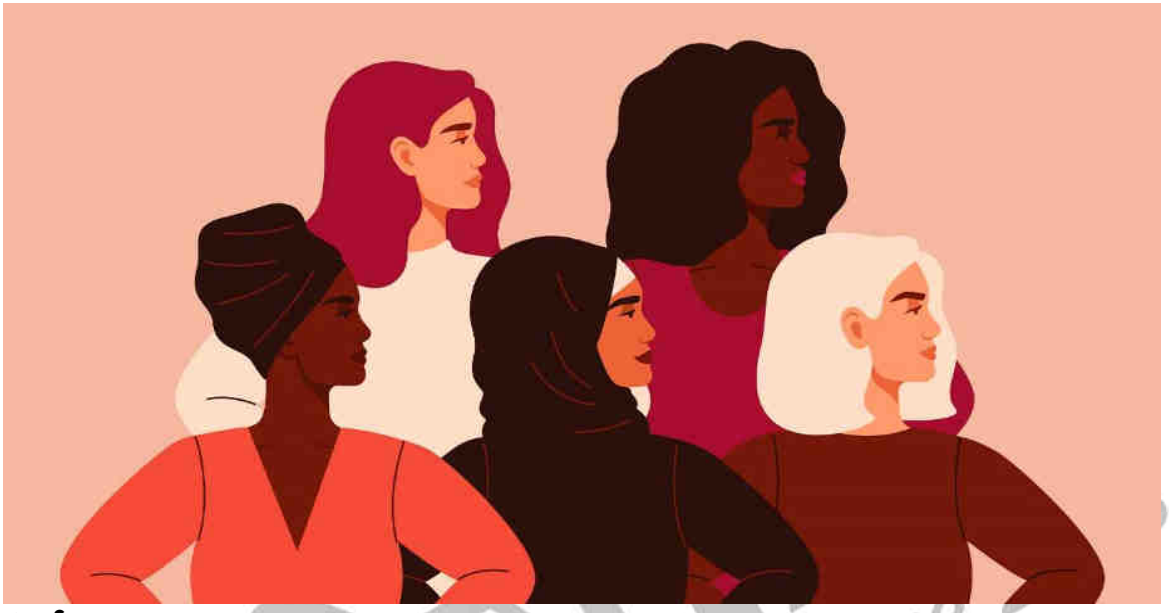

संदर्भ:

महिलाओं को सशक्त बनाने का एक तरीका यह है कि ऋण प्रदान करने में उनकी बेहतर पहुंच सुनिश्चित की जाए।

मुख्य विशेषताएं:

- कुल दिए जाने वाले क्रेडिट में व्यक्तियों-(पुरुषों और महिलाओं) की हिस्सेदारी सितंबर 2022 में 44.4% के उच्च स्तर पर पहुंच गई, जो जून में 44.1% थी।
- भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार, महिलाओं के लिए ऋण वृद्धि, पुरुषों की तुलना में अधिक है जो व्यक्तियों (personal loan) द्वारा लिए गए उधार का 22.6% है।
- ट्रांसयूनियन (सिबिल) के अनुसार, महिलाओं के बीच ऋण की पहुंच 2017 में 7% से बढ़कर 2022 में 14% हो गई है।
- रिपोर्ट से पता चला है कि महामारी के बावजूद, महिला उधारकर्ताओं की संख्या मजबूत हुई है।
- आंकड़ों से पता चलता है कि महिला उधारकर्ताओं में पिछले पांच वर्षों में 15% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से वृद्धि हुई है, जबकि पुरुषों के लिए यह 11% है।

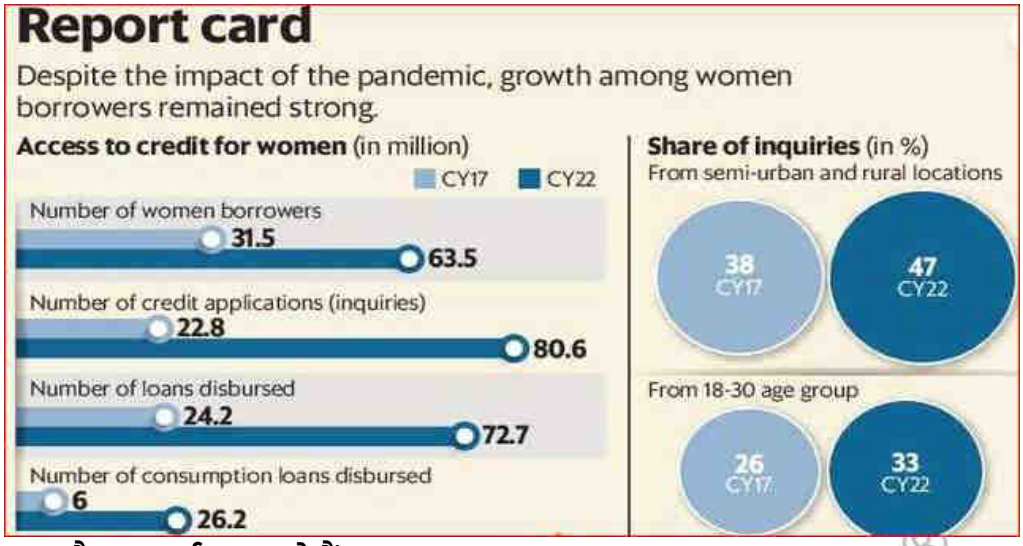

भारतीय राज्य कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं?

- अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उधारकर्ताओं की हिस्सेदारी 2017 और 2022 के बीच 18% सीएजीआर बढ़ी, जबकि मेट्रो और शहरी क्षेत्रों में 14% ही वृद्धि देखी गई है।
- यहां तक कि राजस्थान और बिहार ने भी कुल ऋण-सक्रिय उधारकर्ताओं के आधार पर महिलाओं को ऋण वितरण में सराहनीय वृद्धि दिखाई है।
- जबकि पश्चिम बंगाल ने 22% की वृद्धि देखी गई है, राजस्थान और बिहार दोनों में 21% की वृद्धि देखी गई है।

महिलाओं की शीर्ष ऋण प्राथमिकताएँ:

- **बिजनेस लोन:** महिलाओं द्वारा लिए जाने वाले व्यक्तिगत और उपभोक्ता वस्तुओं के लिए लिए गए उपभोक्ता ऋणों की हिस्सेदारी बढ़ रही है, महिलाओं द्वारा प्राप्त ऋण सुविधा का एक बड़ा हिस्सा व्यावसायिक ऋण है।
- यह महिला उद्यमियों की बढ़ती संख्या को दर्शाता है - ऐसे देश के लिए एक बड़ी मदद जो एक आर्थिक शक्ति के रूप में आगे बढ़ रहा है।
- 2017 और 2022 के बीच, व्यवसाय ऋण लेने वाली महिलाओं की संख्या तीन गुना से अधिक हो गई है।
- आवास ऋण लेने वालों में महिला उधारकर्ताओं की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है।
- यह सरकार की समावेशी योजना के अनुरूप है।

ऋण तक बेहतर पहुंच के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने का महत्व

आर्थिक विकास:

- महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय किसी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।
- जब महिलाओं के पास ऋण तक पहुंच होती है, तो वे व्यवसाय शुरू कर सकती हैं और नौकरियां पैदा कर सकती हैं और अपने और अपने परिवारों के लिए आय उत्पन्न कर सकती हैं।

गरीबी में कमी:

- महिलाएं अक्सर गरीबी से असमान रूप से प्रभावित होती हैं, और ऋण तक उनकी पहुंच की कमी इस समस्या को बढ़ा सकती है।

- जब महिलाओं के पास ऋण तक पहुंच होती है, तो वे अपने व्यवसायों में निवेश कर सकती हैं और आय उत्पन्न कर सकती हैं, जो उन्हें और उनके परिवारों को गरीबी से बाहर निकालने में मदद कर सकती है।

लिंग समानता:

- क्रेडिट तक बेहतर पहुंच के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने से लैंगिक असमानता को कम करने में मदद मिल सकती है।
- जब महिलाओं को क्रेडिट तक पहुंच होती है, तो वे आर्थिक गतिविधियों में अधिक पूरी तरह से भाग ले सकती हैं, जो पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और रूढ़ियों को चुनौती देने में मदद कर सकती हैं।

स्वास्थ्य:

- जब महिलाओं को ऋण तक पहुंच होती है, तो वे स्वास्थ्य देखभाल में निवेश कर सकती हैं और अपने समग्र स्वास्थ्य परिणामों में सुधार कर सकती हैं।
- इससे उनके परिवारों और समुदायों के स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद मिल सकती है।

सामाजिक विकास:

- ऋण तक बेहतर पहुंच के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना सामाजिक विकास में योगदान दे सकता है।
- जब महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होती हैं, तो वे निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में अधिक पूरी तरह से भाग ले सकती हैं, जो अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज बनाने में मदद कर सकती हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की एक रिपोर्ट के अनुसार, कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 27% की वृद्धि हो सकती है।

क्रेडिट प्राप्त करते समय महिलाओं को विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है?

सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं:

- कई समाजों में, महिलाओं से घर और बच्चों की देखभाल करने की उम्मीद की जाती है, जो अक्सर आर्थिक गतिविधियों में संलग्न होने की उनकी क्षमता को सीमित करता है।
- इस धारणा से महिलाओं की वित्तीय क्षमताओं में विश्वास की कमी होती है और क्रेडिट तक उनकी सीमित पहुंच में योगदान देता है।

गिरवी रखने के लिए आस्तियों की कमी (Lack of collateral):

- ज्यादातर मामलों में, महिलाएं संपत्ति या अन्य मूल्यवान संपत्तियों जैसे ऋण के लिए संपार्श्विक प्रदान करने में असमर्थ होती हैं।
- इससे अक्सर वे ऋण प्राप्त करने में असमर्थ हो जाते हैं, क्योंकि अधिकांश वित्तीय संस्थानों के लिए संपार्श्विक एक महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है।

सीमित वित्तीय साक्षरता:

- बहुत-सी महिलाओं को वित्तीय उत्पादों और सेवाओं के बारे में सीमित जानकारी होती है, जिससे उनके लिए जटिल वित्तीय परिदृश्य को नेविगेट करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- इससे वे क्रेडिट उत्पादों के नियमों और शर्तों को समझने में असमर्थ हो सकते हैं, जिससे उनके लिए क्रेडिट

तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है।

भेदभावपूर्ण प्रथाएं:

- महिलाओं को अक्सर वित्तीय संस्थानों द्वारा भेदभावपूर्ण प्रथाओं का सामना करना पड़ता है, जैसे कि उच्च ब्याज दर या सख्त पात्रता मानदंड।
- इससे उनकी क्रेडिट तक पहुंच सीमित हो सकती है, जिससे उनके लिए अपना व्यवसाय शुरू करना या बढ़ाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

नेटवर्क तक पहुंच की कमी:

- महिलाओं को अक्सर उन नेटवर्कों तक पहुंच की कमी होती है जो उन्हें क्रेडिट तक पहुंचने के लिए जानकारी और समर्थन प्रदान कर सकते हैं।
- यह लैंगिक अलगाव या उनके समुदायों में औपचारिक वित्तीय संस्थानों तक पहुंच की कमी जैसे कारकों के कारण हो सकता है।

सीमित गतिशीलता:

- कई संस्कृतियों में, महिलाओं की आवाजाही या बाहर निकलना सीमित होता है और वे क्रेडिट प्राप्त करने के लिए वित्तीय संस्थानों की यात्रा करने में असमर्थ होती हैं।
- इससे उनके लिए ऋण प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां वित्तीय संस्थान आसानी से उपलब्ध नहीं हैं।

आगे की राह :

- संभावित उद्यमियों की पहचान करने के लिए कृषि-क्लीनिकों की तर्ज पर महिला व्यापार क्लीनिक स्थापित किए जा सकते हैं, विशेष रूप से गांवों और टियर 3 शहरों में।
- इन्हें सेवा और लिज्जत पापड़ की तर्ज पर महिला सहकारी समितियों और स्वयं सहायता समूहों के रूप में जुटाया जा सकता है।
- महिलाओं के लिए बैंकों को भावी उद्यमियों तक पहुंचना चाहिए।
- नीति आयोग ने उन्हें प्रायोजकों से जोड़ने के लिए एक महिला उद्यमिता मंच शुरू किया है।
- बी-स्कूल अधिक ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित करना शुरू कर सकते हैं।

निष्कर्ष :

- भारत ने महिलाओं के लिए ऋण तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित करने में काफी प्रगति की है।
- अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है, और इसलिए भारत के गांवों और टियर 3 शहरों में अधिक महिला उद्यमियों को सक्षम बनाने के लिए ठोस प्रयास किए जाने चाहिए।
- क्रेडिट के माध्यम से महिला सशक्तिकरण न केवल लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, बल्कि एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में भारत की क्षमता को साकार करने के लिए भी आवश्यक है।

स्रोत: लाइव मिंट

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न:

Q. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. महामारी के कारण महिलाओं के बीच ऋण की पहुंच 2017 में 14% से घटकर 2022 में 7% हो गई।
2. राजस्थान और बिहार ने महिलाओं को ऋण वितरण में सराहनीय वृद्धि दिखाई है।
3. आवास ऋण लेने वालों में महिला उधारकर्ताओं की संख्या में वृद्धि देखी गई है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) 1, 2 और 3

d) केवल 1 और 3

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- ट्रांसयूनियन (सिबिल) के अनुसार, महिलाओं के बीच ऋण की पहुंच 2017 में 7% से बढ़कर 2022 में 14% हो गई। कथन 1 सही नहीं है
- रिपोर्ट से पता चला है कि महामारी के बावजूद, महिला उधारकर्ताओं की संख्या मजबूत हो गई।
- यहां तक कि राजस्थान और बिहार ने भी कुल ऋण-सक्रिय उधारकर्ताओं के आधार पर महिलाओं को ऋण वितरण में सराहनीय वृद्धि दिखाई। कथन 2 सही है
- आवास ऋण लेने वालों में महिला उधारकर्ताओं की संख्या में वृद्धि देखी जा रही है। कथन 3 सही है।

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

Q. ऋण तक बेहतर पहुंच के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के महत्व पर चर्चा करें और भारत में महिला उधारकर्ताओं के लिए ऋण वृद्धि में हाल के रुझानों का विश्लेषण करें। (250 शब्द)